किताब है - शान्तिदायी विचार,

अध्याय है - ३,

बिसय है - आत्मबल

(1)

ईश्वर तुम स्वयं हो, सर्वशक्तिमान ईश्वर बाहर नहीं, तुम्हारे भीतर ही वर्तमान है। बलवान और विजयी होना तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है, इसके लिए ईश्वर या प्रकृति से प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं। जिसकी आवश्यकता है, उसके लिए दृढ़ता और विश्वास के साथ प्रकृति को आज्ञा दो, प्रकृति उसे पूरा करेगी। यह याद रक्खो कि तुम्हारे भीतर जो जीव है वह सारे संसार का नियन्ता और शासक है। तुम्हें यदि सच्चे आनन्द और सच्ची शान्ति की आवश्यकता है तो इसे पहचान लो।

(2)

भावना और इच्छा में बड़ा बल है। ईच्छा ईश्वरीय वस्तु है। जो चाहते हो उसे उपस्थित करने के लिए प्रकृति को आज्ञा दो और इस विश्वास और आत्मबल के साथ आज्ञा दो कि वह इसे अवश्य पूरा करेगी। नियमानुसार प्रकृति तुम्हारी आज्ञा मानने के लिए विवश है, जैसे सूर्य का पूर्व की ओर उदय होना निश्चित है, उसी तरह से यह भी निश्चित है। आत्मा स्वामी है और प्रकृति उसकी दासी है। जो मनुष्य अपने अज्ञान के कारण इसके विरुद्ध सोचता और भावना करता है उसके हृदय में कभी शान्ति नहीं आती। तुम्हारे भीतर उस सर्वशक्तिमान आत्मा का निवास है, जिसकी यह प्रकृति दासी है।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

प्रकृति में यह शक्ति नहीं है कि वह तुम्हारी इच्छाओं के विरुद्ध चले। इस विषय को जिसने तत्व से समझ लिया है। उसका हृदय सर्वदा शांति और आनन्द से पूर्ण रहता है।

(3)

मनुष्य की आत्मा के भीतर अनन्त शक्ति है, अनन्त और अखण्ड आनन्द है, अनन्त सुख और सच्ची शान्ति है, अनन्त और सच्चा ज्ञान है। सब कुछ है, पर बहुत से लोग आत्मज्ञान न होने के कारण इससे अनभिज्ञ रहते हैं और सर्वशक्तिमान को अपने से अलग मानते हैं। जब तक हम सर्वशक्तिमान को अपने से अलग मानकर उससे डरा करेंगे, तब तक हृदय को सच्ची शान्ति नहीं मिल सकती।

(4)

घुटने टेक कर प्रार्थना करने वाले यह नहीं जानते कि वह अपनी आत्मा को इस तरह से गुलाम बना कर कितना नीचे गिरा रहे हैं। आत्मज्ञान से विमुख मनुष्य यह नहीं जानता कि वह सर्वशक्तिमान बाहर नहीं भीतर है। वह भक्त यह भी नहीं जानता कि हम सेवक नहीं, स्वामी हैं; हम गुलाम नहीं, स्वतन्त्र हैं; हम बद्ध नहीं मुक्त हैं। मुक्ति और बन्धन अपने मन के भीतर है। जो अपने को किसी का गुलाम मानता है वह मुक्त कैसे है ? जो ज्ञान, भक्ति या धर्म हमारे सच्चिदानन्द को या हमारी स्वतन्त्र आत्मा को गुलाम, सेवक या नीच बनाना चाहता है उसे दूर से ही छोड़ दो। अपनी आत्मा को पहचानों, अपनी महानता और अपने गौरव का ज्ञान स्वयं प्राप्त करो। जब तक आप को अपने सच्चे स्वरुप का ज्ञान नहीं है तब तक सच्चा आनन्द और सच्ची शान्ति नहीं मिल सकती। आत्मज्ञानी जीवन्मुक्त है, वह

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

संसार में रहता हुआ भी स्वर्ग में है। आत्मज्ञानी के लिए संसार दुःख का समुद्र नहीं, आनन्द का महासागर है।

(5)

अपने को निर्बल मानना सचमुच निर्बल हो जाना है। अपने को सेवक और बद्ध मानना सचमुच अपने हाथों से अपनी स्वतंत्रता छीन कर हथकड़ी और बेड़ी धारण कर लेना है। ईश्वर के सामने भी नित्य गिड़गिड़ाना, हाथ जोड़ना और नाक रगड़ना मनुष्य को नीच बना देता है। सचमुच यदि ईश्वर का व्यक्तित्व हमारी आत्मा से अलग होता तो वह इतनी प्रार्थनाओं और माँगों से ऊब गया होता। अनन्तकाल बीत गये पर माँगने वाले अब तक दरिद्र ही रहे। अब भी वही मांगें और प्रार्थनायें वर्तमान हैं। बिना आत्मज्ञान के हृदय में पूर्णता नहीं आ सकती, जब तक हृदय के भीतर पूर्णता नहीं है तब तक वहाँ आनन्द और शान्ति नहीं रह सकती।

(6)

जो मांगों अपनी आत्मा से मांगों। दूसरे से मांगना भिक्षा है, जो अति तुच्छ है। जो मांगों उसे अपना समझकर मांगों। मांगना छोड़कर ले लेने की आदत डालो। सुख, शान्ति और आनन्द पर तुम्हारा साम्राज्य है, तुम्हारा स्वत्व है, तुम्हारा अधिकार है, वह तुम्हारी वस्तु है। दूसरे की वस्तु गिड़-गिड़ाकर मांगना या चुरा कर ले लेना दोनों पाप है। तुम्हें किसी से मांगने और प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा खजाना तुम्हारे भीतर छिपा हुआ और बन्द पड़ा है। आत्मज्ञान की कुञ्जी लेकर उसे खोलो और जो चाहो ले लो। आश्चर्य है कि सम्राट दूसरों के सामने हाथ जोड़े ! आश्चर्य है कि धनकुबेर भी सबके सामने हाथ पसारता और भीख मांगता फिरे। आश्चर्य है कि

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

सर्वशक्तिमान भी दूसरों की सहायता चाहे ! आश्चर्य है कि सारे संसार का स्वामी अपने को गुलाम, दास और सेवक कहे ! आश्चर्य है कि बलवान सिंह अपने को बकरी और गीदड़ समझे ! अतः सच्ची शान्ति सच्चे आनन्द के लिए सबसे पहले अपने सच्चे स्वरुप का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। किसी की दया के भरोसे या मांगने से अनंत ज्ञान, अनन्त धन, अनन्त बल; अनन्त आनन्द नहीं मिल सकता।

(7)

आत्मा के भीतर अनन्त धन, अनन्त रुप और अनन्त बल है। इस खजाने पर तुम्हारे अज्ञान और विश्वास ने ताला चढ़ा रक्खा है। विश्वास की कुंजी से अविश्वास के ताले को हटाकर या खोलकर इस आत्मा में से जो चाहे ले लो। यह चोरी या डाका नहीं है, यह अपना ही खजाना है। भ्रमवश या अज्ञान से अब तक तुमने इधर भीतर की ओर दृष्टि नहीं डाली हैं। चीज तुम्हारी है, खजाना तुम्हारा है, यह आत्मदेव स्वयं तुम्हारे हैं। पुराने विश्वासों की ओर पीठ करके अपनी आत्मा के सच्चे स्वरुप की ओर मुड़ जाओ। ज्ञान और भ्रम की आग से झुलसे मनुष्य जब तक अपनी आत्मा की शीतलता के पास नहीं पहचानेंगे, तब तक शान्ति नहीं मिल सकती। हमारा सच्चा स्वरुप और हमारी सच्ची आत्मा, शान्ति और आनन्द का समुद्र है। भ्रम और अज्ञान के जंगल में भटकना छोड़कर इस गंगा में स्नान करो।

(8)

सच्ची भक्ति और सच्चा प्रेम मनुष्य का अपनी आत्मा से होता है। अतः ईश्वर के सच्चे भक्त ईश्वर को अपनी आत्मा से अलग से अलग नहीं मानते। इसी प्रेम को अनन्य प्रेम कहते हैं। जो अन्य नहीं

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

है, वही अनन्य है। अपने आपका प्रेम या भक्ति अनन्य भक्ति या अनन्य प्रेम कहलाता है। ईश्वर का सच्चा भक्त अन्त में जो जानता है वह यही है कि हम स्वयं ईश्वर हैं। जब यह सच्चा ज्ञान मनुष्य को तत्व से हो जाता है तो मनुष्य का अन्तःकरण शीतल हो जाता है और हृदय आनन्द तथा शान्ति से पूर्ण हो जाता है।

(9)

यदि संसार के सब भूतों में वही व्यापक है तो तुम जीवात्मा कैसे हो ? यदि सारे संसार में वही निर्विकार पुण्यात्मा वर्तमान है तो तुम दुर्गुणों से पूर्ण पापात्मा कैसे हो ? अपने को पापात्मा, क्षुद्रात्मा और नीच सनझना छोड़ दो। जो अपनी आत्मा को पापी और नीच समझता है वही आत्महीन है, यही आत्महत्या है, ऐसा मनुष्य कभी उन्नति नहीं कर सकता।

(10)

अज्ञान से संसार दुःखमूल है। अज्ञान से संसार पापमय है। अज्ञान से मनुष्य ईश्वर नहीं एक अत्यन्त क्षुद्र जीव है। तमाम बुराइयाँ अज्ञान में है, वास्तव में कहीं बुराई नहीं है, किन्तु संसार की सारी जगह उस आत्मा से पूर्ण है, जो निर्विकार पवित्र और महान है। यदि हृदय को आनन्द और शान्ति से भरना है तो इस ज्ञान पर विचार करो, सारा भ्रम और सारा अज्ञान दूर हो जायगा।

(11)

लोग कहते हैं ज्ञान व्यवहार के लिए नहीं है। यदि ऐसी बात है तो सारा ज्ञान व्यर्थ है। 'अहं ब्रह्मास्मि' कहने से क्या लाभ, यदि

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

हृदय से गुलामी के भाव नहीं निकले और व्यवहार में प्रत्यक्ष नहीं हुआ ? सोना को सोना जानकर भी व्यवहार में तुम उससे मिट्टी का काम लेते हो तो सब व्यर्थ है। अपने को ईश्वर मानते हुए भी यदि तुम अपने को रोगी, निर्बल, बद्ध, गुलाम, परतन्त्र और नीच समझते हो अर्थात व्यवहार में इसी का उपयोग करते हो और ब्रह्म ज्ञान को नहीं छूते हो तो सब ज्ञान व्यर्थ है। ज्ञान और योग को व्यवहारोपयोगी बनाओ, यही आनंद को प्राप्त करने का गुप्त रहस्य और शान्ति की कुञ्जी है।

(12)

सब जान कर यदि हाथ पर हाथ रखे बैठे रहोगे तो कोई लाभ नहीं है। ज्ञान और योग मनुष्य को उन्नति के शिखर पर पहुंचा सकता है पर जब उसे व्यवहार में लाओगे तब । ज्ञान और योग वह तलवार है जसमें तुम अपनी सारी विघ्न बाधाओं को हटाकर आगे बढ़ सकते हो। पर अच्छी से अच्छी तलवार म्यान में रखकर खूंटी पर टांग दी जाय तो कोई लाभ नहीं है। इसलिए मनोबल, इच्छाशक्ति, विश्वास, ज्ञान और योग को व्यवहार में लाओ। आलस्य छोड़ कर उठो और कुछ करो। कर्म और परिश्रम में ही शान्ति और आनन्द है।

--समाप्त--

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.